ओ३म्

'वैदिक धर्म–दर्शन–संस्कृति के प्रकाण्ड आचार्य राजवीर शास्त्री नहीं रहे'

–स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, गुरूकुल गौतमनगर, दिल्ली।
(प्रस्तुतकर्ता––मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।)

वैदिक धर्म–दर्शन–संस्कृति–साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित, प्रसिद्ध वैयाकरण, उच्चकोटि के विचारक एवं सिद्धहस्त लेखक परम आदरणीय श्री राजवीर शास्त्री जी नहीं रहे। **आज बृहस्पतिवार, दिनांक 25 सितम्बर, 2014 को प्रातः उनका मोदीनगर, उत्तर प्रदेश में काफी समय से रूग्ण रहने के बाद निधन हो गया।** पण्डितजी का जन्म उत्तर प्रदेश गाजियाबाद मण्डल के ग्राम फजलगढ़ के एक आर्य परिवार में, पिताश्री शिवचरण दास एवं माता श्रीमती मनसा देवी के गृह में दिनांक 4 अप्रैल सन् 1938 को हुआ था। इस समय उनकी आयु 76 वर्षों की थी।

पं.. राजवीर शास्त्री

पं. राजवीर शास्त्री की प्रारम्भिक शिक्षा अपने जन्म स्थान के एक ग्रामीण विद्यालय में सम्पन्न हुई थी। इसके पश्चात आपको वेदार्थ विद्या के अध्ययन हेतु सन् 1946 में गुरूकुल बुकलाना, मेरठ (उत्तर प्रदेश) में प्रविष्ट कराया गया। वहां से कुछ समय के बाद आप वेद विद्यालय गुरूकुल, गौतमनगर, नई दिल्ली में अध्ययनार्थ आये। आपके पिताश्री भी इसी संस्था में सेवारत थे। आपकी कुशाग्र बुद्धि को देखते हुए कुछ समय के पश्चात आपको वैदिक–धर्म–ध्वज–वाहक, प्रसिद्ध ऐतिह्यविद् पूज्यपाद आचार्य भगवानदेव जी (स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती) द्वारा संचालित गुरूकुल महाविद्यालय, झज्जर में प्रविष्ट किया गया जहां आपने पूरे मनोयोग से सन् 1954 तक वेद–वेदांगों का गहन अध्ययन किया। इस काल में परीक्षा न देकर विद्वता उपार्जन हेतु आपने परम्परागत अध्ययन किया था।

इसके पश्चात आपने समसामयिक परिस्थिति एवं आवश्यकता के अनुसार पंजाब विश्वविद्यालय में विधिवत परीक्षा उत्तीर्ण करते हुए विशारद, शास्त्री तथा प्रभाकर की उपाधियां प्राप्त कीं। इस प्रकार परम्परागत अधीतशास्त्र तथा आधुनिक परीक्षा प्रणाली दोनों में परिपूर्ण होने पर आपने सन् 1958 से 1960 तक गुरूकुल झज्जर में अध्यापन कार्य किया। आप पंजाब के शिक्षा विभाग में सन् 1960 से 1967 तक संस्कृत अध्यापक के पद पर कार्यरत रहे। वाराणसनेय संस्कृत विश्वविद्यालय से आचार्य तथा मेरठ विश्वविद्यालय से एम.ए. संस्कृत की परीक्षा उत्तीर्ण की।

आपने ग्राम बैरी, जिला झज्जर (हरियाणा) में शासकीय विद्यालय में अध्यापन कार्य करते हुए आर्ष ग्रन्थों के अध्यापन हेतु अतिरिक्त समय निकालकर आचार्य बलदेव जी एवं इन्द्रदेव मेधार्थी को व्याकरण महाभाष्य आदि पढ़ाया। तदुपरान्त आप सन् 1967 से दिल्ली प्रशासन में संस्कृत शिक्षक का कार्य करते हुए सन् 1998 में सेवानिवृत्त हुए। आप व्याकरण शास्त्र के तलस्पर्शी विद्वान् श्री विश्वप्रिय जी के योग्यतम शिष्य रहे हैं। आपको अनेक संस्थाओं ने व्याकरण अध्यापनार्थ आमन्त्रित करके ज्ञानार्जन किया जिनमें कन्या गुरूकुल नरेला, गुरूकुल गौतमनगर, दिल्ली एवं गुरूकुल पौंधा, देहरादून मुख्य हैं।

आपकी विद्वता चतुर्दिक् फैली है। आपकी निर्बाध लेखनी से अनेक ग्रन्थों का लेखन एवं सम्पादन हुआ है, जिनमें योगदर्शन–भाष्यम्, वैदिक शब्दकोष, उपनिषद्भाष्य्, आदि ग्रन्थों का लेखन तथा आर्य जगत् की प्रसिद्ध पत्रिका ''दयानन्द सन्देश'' का सम्पादन हुआ है, जिसके सृष्टि संवत्, वैदिक मनोविज्ञान, मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण एवं सत्यार्थ प्रकाश आदि विशेषांक अति प्रशंसनीय हैं।

आपकी विद्वता एवं विशिष्ट कार्य को देखते हुए अनेक प्रसिद्ध संस्थाओं ने आपको सम्मानिक किया है जिसमें सन् 2000 में विक्रम प्रतिष्ठान संयुक्त राज्य अमेरिका, सन् 2002 में आर्य समाज सान्ताकूज, मुम्बई, सन् 2007 में गुरूकुल झज्जर द्वारा स्वामी ओमानन्द स्मृति पुरस्कार तथा मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली द्वारा प्रदत्त सम्मान प्रमुख हैं।

यद्यपि पं. राजवीर शास्त्री अब हमारे मध्य में नहीं हैं तथापि उन्होंने महर्षि दयानन्द के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए निष्काम भाव से जो पुरूषार्थ व साहित्य साधना की है उससे युग–युगान्तरों तक वैदिक धर्म प्रेमी लोग प्रेरणा ग्रहण कर लाभान्वित होते रहेंगे और महर्षि दयानन्द और पंण्डित राजवीर शास्त्री जी के स्वप्नों को साकार करेगें। हम उन्हें अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हैं और उनकी परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति एवं संवेदना व्यक्त करते हैं। ईश्वर दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति और मोक्ष प्रदान करें, यह प्रार्थना है।

प्रस्तुतकर्ताः मनमोहन आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला ब्लाक 2
देहरादून–248001
फोनः 09412985121